पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 01.12.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

मंगलवार, 23 दिसम्बर 2014
प्रातः 10 से 1.30 बजे तक
कान्सटिट्यूशन क्लब,
रफी मार्ग,नई दिल्ली
निकट– मैट्रो स्टेशन
पटेल चौक
– अनिल आर्य,संयोजक

वर्ष-31 अंक-13 मार्गशीर्ष-2071 दयानन्दाब्द 190 01 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2014 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.12.2014, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

दिल्ली चलो ओ३म् दिल्ली चलो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 36 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्य नेता, शिक्षाविद् **डा. अशोक कुमार चौहान** के सानिध्य एवं
युवा वैदिक विद्वान डा. जयेन्द्र आचार्य के ब्रह्मत्व में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 24, 25, 26 जनवरी 2015 (शनि, रवि व सोमवार)

स्थान: कमल पार्क, सफदरजंग एनक्लेव (निकट ग्रीन पार्क मैट्रो स्टेशन) नई दिल्ली-29

विराट् शोभा यात्रा: शनिवार 24 जनवरी 2015, प्रात: 10:00 बजे

शुभारम्भ: कमल पार्क, सफदरजंग एनक्लेव, दिल्ली से प्रारम्भ होगी

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 31 दिसम्बर 2014 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके।
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 31 दिसम्बर 2014 तक फोन न: श्री प्रकाश वीर-9811757437, श्री ओम बीर-9868803585, श्री सत्यपाल-9899200447, श्री राणा जी-9868089983 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुंचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें।

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है
कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली''
के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल,
चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9868661680

'महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द और गुरूकुल प्रणाली'

– मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती (1825–1883) आर्य समाज के संस्थापक हैं। आर्य समाज की स्थापना 10 अप्रैल, 1875 को मुम्बई के काकडवाड़ी स्थान पर हुई थी। इसी स्थान पर संसार का सबसे पुराना आर्य समाज आज भी स्थित है। आर्य समाज की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य वेदों का प्रचार व प्रसार था तथा साथ ही वेद पर आधारित धार्मिक तथा सामाजिक क्रान्ति करना भी था जिसमें आर्य समाज आंशिक रूप से सफल हुआ है। चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद सभी सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं। यह वेद सृष्टि के आरम्भ में सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सृश्टिकर्ता, सर्वान्तर्यामी परमश्वर से अमैथुनी सृश्टि में उत्पन्न प्रथम चार ऋशियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को उनके अन्तःकरण में सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी ईश्वर की प्रेरणा द्वारा प्राप्त हुए थे। आजकल गुरू अपने शिश्यों को ज्ञान देता है और पहले से भी यही परम्परा चल रही है। वह बोल कर, व्याख्यान व उपदश द्वारा ज्ञान देते हैं। ज्ञान प्राप्ति का दूसरा तरीका पुस्तकों का अध्ययन है। सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने ऋषियों वा मनुष्यों को ज्ञान देना था। ईश्वर अन्तरर्यामी है अर्थात् वह हमारी आत्माओं के भीतर भी सदा–सर्वदा उपस्थित रहता है। अतः वह अपना ज्ञान आत्मा के भीतर प्ररेणा द्वारा प्रदान करता है। यह ऐसा ही है जैसे गुरू का अपने शिष्य को बोलकर उपदेश करना। गुरू की आत्मा में जो विचार आता है वह उन विचारों को अपनी वाणी को प्रेरित करता है जिससे वह बोल उठती है। शिष्य के कर्ण उसका श्रवण करके उस वाणी को अपनी आत्मा तक पहुंचाते हैं। इस उदाहरण में गुरू का आत्मा और शिष्य की आत्मायें एक दूसरे से पृथक व दूर हैं अतः उन्हें बोलना व सुनना पड़ता है। परन्तु ईश्वर हमारे बाहर भी है और भीतर भी है। अतः उसे हमें कुछ बताने के लिए बोलने की आवश्यकता नहीं है। वह जीवात्मा के अन्तःकरण में प्रेरणा द्वारा अपनी बात हमें कह देता है और हमें उसकी पूरी यथार्थ अनुभूति हो जाती है। इसी प्रकार से ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों को ज्ञान दिया था।

वर्तमान सृष्टि में वेदोत्पत्ति की घटना को 1,96,08,53,114 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इस लम्बी अवधि में वेद की भाषा संस्कृत से अनेकों भाषाओं की उत्पत्ति हो चुकी है। वर्तमान में संस्कृत का प्रचार न होने से यह भाषा कुछ लोगों तक सीमित हो गई। इसके विकारों से बनी भाषायें हिन्दी व अंग्रेजी व कुछ अन्य भाषायें हमारे दश व समाज में प्रचलित हैं। संस्कृत का अध्ययन कर वेदों के अर्थों को जाना जा सकता है। दूसरा उपाय महर्षि दयानन्द एवं उनके अनुयायी आर्य विद्वानों के हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में वेद भाष्यों का अध्ययन कर भी वेदों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर से वेदों की उत्पत्ति होने, संसार की प्राचीनतम पुस्तक होने, सब सत्य विद्याओं से युक्त होने, इनमें ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सत्य स्वरूप का यथार्थ वर्णन होने आदि कारणों से वेद आज व हर समय प्रासंगिक है। इस कारण वेदों का अध्ययन व अध्यापन सभी जागरूक, बुद्धिमान व विवेकी लोगों को करना परमावश्यक है अन्यथा वह इससे होने वाले लाभों से वंचित रहेंगे। वेदों से दूर जाने अर्थात् वेद ज्ञान का अध्ययन व अध्यापन बन्द होने के कारण संसार में अज्ञान व अन्धविश्वास उत्पन्न हुए जिससे हमारे दश व मनुष्यों का पतन हुआ और हम गुलामी व अनेक दुःखों से ग्रसित हुए। महर्षि दयानन्द ने संसार में सत्य ज्ञान वेदों का प्रकाश करने और प्राणी मात्र के हित के लिए वेदों का प्रचार व प्रसार किया और वेदों का पढ़ना–पढ़ाना व सुनना–सुनाना सभी मनुष्यों जिन्हें उन्होंनें आर्य नाम से सम्बोधित किया, उनका परम धर्म घोषित किया।

अब विचार करना है कि वेदों का ज्ञान किस प्रकार से प्राप्त किया जाये। इसका उत्तर है कि जिज्ञासु या विद्यार्थी को वेदों के ज्ञानी गुरू की भारण में जाना होगा। वह बालक को अपने साथ तब तक रखेगा जब तक की शिष्य वेदादि भाास्त्रों की शिक्षा पूरी न कर ले। हम जानते हैं कि जब बच्चा जन्म लेता है तो उस समय वह अध्ययन करने के लिए उपयुक्त नहीं होता। लगभग 5 वर्ष की आयु व उसके कुछ समय बाद तक वह माता–पिता से पृथक रहकर ज्ञान प्राप्त करने के लिए योग्य होता है। ऐसे बालकों को उनके माता–पिता किसी निकटवर्ती गुरू के आश्रम में ले जाकर उस गुरू द्वारा बच्चों का प्रारम्भिक अध्ययन से आरम्भ कर सांगोपांग वेदों का अध्ययन करा सकते हैं। उस स्थान पर जहां बालक–बालिकाओं को वेदों का अध्ययन व अध्यापन कराया जाता है ''गुरूकुल'' कहा जाता हैं। यह गुरूकुल कहां हों, इनका स्वरूप व अध्ययन के विषय आदि क्या हों इस पर विचार करते हैं। अध्ययन करने का स्थान माता–पिता व पारिवारिक जनों से दूर होना चाहिये जहां शिष्य अपने गुरू के सान्निध्य में रह कर निर्विघ्न अपनी शारीरिक व बौद्धिक उन्नति करने के साथ अपने श्रम व तप के द्वारा गुरू की सेवा कर सके। अध्ययन करने का स्थान वा शिक्षा का केन्द्र गुरूकुल किसी शान्त वातावरण में जहां वन, पर्वत व नदी अथवा सरोवर आदि हों, होना चाहिये। गुरू, शिष्यों व शृत्यों के आवास के लिये कुटियायें आदि उपलब्ध हों। एक गौशाला हों जिसमें गुरूकुल वासियों की आवश्यकता के अनुसार दुग्ध उपलब्ध हो। यदि अन्न आदि पदार्थों की भी व्यवस्था हों, तो अच्छा है अन्यथा फिर शिक्षा हेतु निकट के ग्राम व नगरों में जाना होगा। वर्तमान परिस्थिति के अनुसार भोजन वस्त्र आदि की भी सुव्यवस्था होनी चाहिये और पुस्तकें व अन्य आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध होनी चाहिये। यह सब सुव्यवस्था होने पर गुरूजी को पढ़ाना है व बच्चों को पढ़ना है। वेदों का ज्ञान शब्दमय होने से शब्द का ज्ञान शिष्य को गुरू से करना होता है। वेदों के शब्द रूढ़ नहीं हैं। वह सभी धातुज या यौगिक हैं। अतः घातु एवं यौगिक शब्दों के ज्ञान में सहायक पुस्तक व ग्रन्थों का होना आवश्यक है। सम्भवतः यह ग्रन्थ वर्णमाला, अष्टाध्यायी, धातु पाठ, महाभाष्य, निधण्टु व निरूक्त आदि ग्रन्थ होते हैं। गुरूजी को क्रमशः इनका व वेदार्थ में सहायक अन्य व्याकरण ग्रन्थों व शब्द कोशों का ज्ञान कराना है। गुरूकुल में अध्ययन पर कुछ आगे विचार करते हैं। हम जानते हैं कि हम वर्तमान में रहते हैं। बीता हुआ समय भूतकाल और आने वाला भविष्य काल कहलाता है। जब हम भाषा का प्रयोग करते हैं तो क्रिया पद को यथाव यकता भूत, वर्तमान व भविष्य का ध्यान करते हुए तदानुसार संज्ञा, सर्वनाम आदि का प्रयोग करते हैं। यह व्याकरण शास्त्र के अन्तर्गत आते हैं। अतः गुरूकुल में गुरूजी को शिष्य को पहले वर्णमाला व व्याकरण शास्त्र का ज्ञान कराना होता है। व्याकरण शास्त्र का ज्ञान हो जाने के बाद गुरूजी से प्रकीर्ण विषयों को जानकर वेद के ज्ञान में सहायक इतर अंग व उपांग ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं और उसके बाद वेदों का अध्ययन करने पर विद्या पूरी हो जाती है। विद्या पूरी होने पर शिष्य स्नातक हो जाता है। अब वह घर पर रहकर स्वाध्याय आदि करते हुए कृषि, चिकित्सा, ग्रन्थ लेखन, आचार्य व उपदेशक, पुरोहित, सैनिक, राजकर्मी, वैज्ञानिक, उद्योगकर्मी आदि विभिन्न रूपों में सेवा करके अपना जीवनयापन कर सकता है। वेद, वैदिक साहित्य एवं वेद व्याकरण का अध्ययन करने के बाद स्नातक अनेक भाषाओं को सीखकर तथा आधुनिक विज्ञान व गणित आदि विषयों का अध्ययन कर जीवन का प्रत्येक कार्य करने में समर्थ हो सकता है। यह कार्य उसको करने भी चाहिये। हम ऐसे लोगों को जानते हैं जिन्होंने गुरूकुल में अध्ययन किया और बाद में वह आईपीएस, आईएएस आदि भी बने। विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचित, संस्कृत अकादमियों के निदेशक, सफल उद्योगपति आदि बने, अनेक सांसद भी बने। स्वामी रामदेव और आचार्य बालकृष्ण भी आर्य गुरूकुलों की देन हैं। अतः वेदों का अध्ययन कर भी जीवन में सर्वांगीण उन्नति हो सकती है, यह अनेक प्रमाणों से सिद्ध है। यह उन लोगों के लिए अच्छा उदाहरण हो सकता है जो अपने बच्चों को धनोपार्जन कराने की दृष्टि से महंगी पाश्चात्य मूल्य प्रधान शिक्षा दिलाते हैं और बाद में आधुनिक शिक्षा में दीक्षित सन्तानें अपने माता–पिता आदि परिवारजनों की उपेक्षा व कर्तव्यहीता करते दिखाई देते हैं।

प्राचीनकाल में गुरूकुल वैदिक शिक्षा के केन्द्र हुआ करते थे जो महाभारत काल के बाद व्यवस्था के अभाव में धीरे धीरे निष्क्रिय हो कर समाप्त हो गये। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में गुरूकुलीय शिक्षा पर विस्तार से प्रकाश डाला है। उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में स्कूलों में शिक्षा दी जाती थी। इसका उद्देश्य शासक वर्ग अंग्रेजों का भारत के बच्चों को अंग्रेजी के संस्कार देकर उन्हें गुप्त और लुप्त रूप से वैदिक संस्कारों से दूर करना और उन्हें अंग्रेजियत और ईसाईयत के संस्कारों व परम्पराओं के निकट लाना था। स्वामी दयानन्द ने अंग्रेजों की इस गुप्त योजना को समझा था और इसके विकल्प के रूप में गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली का अपने ग्रन्थों में विधान किया जिससे अंग्रेजी शिक्षा के खतरों का मुकाबला किया जा सके। स्वामी श्रद्धानन्द महर्षि दयानन्द सरस्वती के योग्यतम् अनुयायी थे। उन्होंने गुरूकुलीय शिक्षा के महत्व को समझा था और अपना जीवन अपने गुरू की भावना के अनुसार हरिद्वार के निकट एक ग्राम कांगड़ी में सन् 1902 में गुरूकुल की स्थापना में समर्पित किया और उसको सुचारू व सुव्यवस्थित संचालित करके दुनियां में एक उदाहरण प्रस्तुत किया। स्वामी श्रद्धानन्द का यह कार्य अपने युग का एक क्रान्तिकारी कदम था। उनके द्वारा स्थापित गुरूकुल ने आज एक विश्वविद्यालय का रूप ले लिया है। आज समय के साथ देशवासियों व आर्य समाजियों का भी वेदों के प्रति वह अनन्य प्रेमभाव दृष्टिगोचर नहीं होता जो हमें महर्षि दयानन्द के साहित्य को पढ़ कर प्राप्त होता है। यहां वेद भी अन्य भाषाओं व उनके साहित्य की ही तरह एक विषय बन कर रह गये हैं और प्रायः अपना महत्व खो बैठे हैं। इसका एक कारण समाज की अंग्रेजीयत तथा आत्मगौरव, स्वधर्म व स्वसंस्कृति के अभाव की मनोदशा है। संस्कृत व वेदों का अध्ययन करने से उतनी अर्थ प्राप्ति नहीं हो पाती जितनी की अन्य विषयों को पढ़ कर होती है। नित्य प्रति ऐसे अनेक लोग सम्पर्क में आते हैं जो संस्कृत पढ़े है और पढ़ा भी रहे हैं परन्तु उनका पारिवारिक व समाजिक जीवन सन्तोषजनक नहीं है। ऐसे लोगों को देखकर लोगों में संस्कृत के प्रति उत्साह में कमी का होना स्वाभाविक है। हमारे आर्य समाज के विद्वानों व नेताओं को इस समस्या पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये। सरकार व निजी प्रतिष्ठानों में आज हिन्दी, अंग्रेजी व क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व है जहां संस्कृत प्रायः गौण, उपेक्षित व महत्वहीन है। वर्तमान में संस्कृत केवल धर्म संबंधी कर्मकाण्ड की भाषा बन कर रह गई है। समाज में इस मनोदशा को बदलकर संस्कृत के व्यापक उपयोग के मार्ग तलाशने होंगे। हमें लगता है कि संस्कृत पढ़े हमारे स्नतकों को हिन्दी व अंगेजी भाषा सहित आधुनिक ज्ञान, विज्ञान तथा गणित आदि विषयों का अध्ययन भी करना चाहिये जिससे वह सरकारी सेवा व अन्य व्यवसायों में अन्य अभ्यर्थियों के समान स्थान प्राप्त कर सकें जो सम्प्रति प्राप्त नहीं हो पा रहे हैं। संस्कृत के भविष्य से जुड़े एक प्रसंग का उल्लेख करना भी यहां उचित होगा। कुछ सप्ताह पूर्व वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी की विदुशी आचार्या डा. नन्दिता भाास्त्री ने कहा कि संस्कृत भाषियों की संख्या दिन प्रति घट रही है। विगत जनगणना में यह 15–20 हजार ही थी। यदि यह 10 हजार या इससे कम हो जाती है तो सरकार के द्वारा संस्कृत को मिलने वाली सभी सुविधायें व संरक्षण बन्द हो जायेंगे और यह दिन संस्कृत प्रेमियों के लिए अत्यन्त दुखद होगा। स्वामी श्रद्धानन्द के बाद स्वामी दयानन्द के अनुयायियों ने स्वामी श्रद्धानन्द का अनुकरण कर अनेक गुरूकुल खोले जिनकी संख्या वर्तमान में 500 से अधिक है। यदि यह सभी गुरूकुल सुव्यवस्थित रूप से चलायें जा सकें तो यह वैदिक धर्म की रक्षा और उसके प्रचार प्रसार का सबसे बड़ा साधन सिद्ध हो सकते हैं और भविष्य में भी होंगे। वेद, वैदिक साहित्य, धर्म, संस्कृत और संस्कृति की रक्षा व देश के भावी स्वरूप की दृष्टि से में इन गुरूकुलों की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। इसका उन्नयन करना आर्य समाज का तो कार्य है ही साथ ही सरकार में वेदों को मानने वाले लोगों को वेदों की रक्षा व प्रचार के लिए प्रभावशाली योजनायें एवं कार्य करने चाहियें। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो 'धर्मो एव हतो हन्ति' की भांति धर्म रक्षा में प्रमाद करने से यह धर्म हमे ही मार देगा।

स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता थे। वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा सार्वदेशिक सभा के भी प्रधान रहे। शुद्धि आन्दोलन के भी वह प्रमुख सूत्रधार रहे और सम्भवतः यही उनकी शहादत का कारण बना। स्वामी जी का देश की आजादी के आन्दोलन में भी महत्वपूर्ण योगदान था। समाज सुधार के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियां अनेकों हैं। हम उनके जीवन को वेदों का मूर्त रूप देखते हैं जिसमें कहीं कोई कमी हमें दिखाई नहीं देती। काश कि महर्षि दयानन्द अधिक समय तक जीवित रहते तो श्रद्धानन्द उनके सर्वप्रिय शिष्य होते। आर्य समाज व महर्षि दयानन्द की भक्ति के लिए उन्होंने घर फूंक तमाशा देखा। उनका व्यक्तित्व आदर्श पिता, आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श समाज सुधारक, आदर्श नेता, आदर्श स्वतन्त्रता सेनानी, पत्रकार, साहित्यकार, लेखक, विद्वान, शिक्षा शास्त्री, धर्म गुरू, वेदभक्त, वेद सेवक, वेद पुत्र, ईश्वर पुत्र व ईश्वर के सन्देशवाहक का था। 23 दिसम्बर, 1926 को वह एक शडयन्त्र का शिकार होकर एक कातिल अब्दुल रसीद द्वारा शहीद कर दिये गये। हम समझते हैं कि उन्होंने अपने रक्त की साक्षी देकर वैदिक सिद्धान्तों व मान्यताओं की साक्षी दी है। हम उन्हें अपनी श्रद्धाजंलि प्रस्तुत करते हैं। जब तक सृष्टि पर मनुष्यादि प्राणी विद्यमान हैं, विवेकी दशवासी स्वामी श्रद्धानन्द जी के यश, कीर्ति, उनके कार्य और बलिदान को स्मरण कर उनसे प्रेरणा लेते रहेंगे।

पताः 196 चुक्खूवाला–2,देहरादून–248001 / फोनः 09412985121

डा.सुन्दरलाल कथुरिया सम्मानित व आर्य समाज मंगोलपुरी का उत्सव सम्पन्न

दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा पुरूषोतम भवन में आर्य समाज के गौरव डा. सुन्दरलाल कथुरिया जी को सम्मानित करते हुए पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त डा.जी.बी.जी. कृष्णमूर्ति, पूर्व महापौर डा. महेश शर्मा आदि। द्वितीय चित्र–रविवार, 30 नवम्बर 2014, आर्य समाज, मंगोलपुरी, दिल्ली के उत्सव पर समाज सेवी श्री रामकुमार भगत का स्वागत करते डा. अनिल आर्य, मंत्री श्री धर्मपाल आर्य, श्री रणसिंह राणा व श्री महेन्द्र टांक। आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ करवाया व श्री अंकित शास्त्री के मधुर भजन हुए।

आर्य समाज शकूर बस्ती में उत्सव व हरिद्वार में परिषद् ने जीते मैडल

आर्य समाज, रेलवे रोड़, शकूर बस्ती, दिल्ली का उत्सव सम्पन्न हुआ । आचार्य गवेन्द्र शास्त्री की वेद कथा व श्री अंकित शास्त्री के मधुर भजन हुए। चित्र में डा. अनिल आर्य को सम्मानित करते हुए श्री योगेन्द्र शर्मा व श्रीमती रेखा शर्मा। द्वितीय चित्र–हरिद्वार के प्रेमनगर आश्रम में परिषद् के व्यायाम शिक्षक श्री सौरभ गुप्ता के साथ योग टीम। साक्षी रावत ने गोल्ड मैडल, शिवम मिश्रा ने सिलवर मैडल व जैड अन्सारी ने ब्रोन्ज मैडल जीता। 6 बच्चे मैरिट में रहे। राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में 832 प्रतियोगी सम्मलित हुए। युवा उद्घोष की हार्दिक बधाई।

संस्कृत भाषा की महता

आज संस्कृत एवं जर्मन भाषा को लेकर चर्चा जोरो पर हैं। तीसरी भाषा के रूप में केंद्रीय विद्यालयों में जर्मन के स्थान पर संस्कृत भाषा को लागु करने के सरकार के फैसले का कुछ लोग जोर शोर से विरोध कर रहे हैं। उनका कहना हैं की जर्मन जैसी विदेशी भाषा को सीखने से रोजगार के नवीन अवसर मिलने की अधिक सम्भावना हैं जबकि संस्कृत सीखने का कोई लाभ नहीं हैं। कोई भी व्यक्ति जो संस्कृत भाषा कि महता से अनभिज्ञ हैं इसी प्रकार की बात करेगा परन्तु जो संस्कृत भाषा सीखने के लाभ जानता हैं उसकी राय निश्चित रूप से संस्कृत के पक्ष में होगी। संस्कृत भाषा को जानने का सबसे बड़ा लाभ यह हैं कि हमारे धर्म ग्रन्थ जैसे वेद, दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता इत्यादि में वर्णित नैतिक मूल्यों, सदाचार,चरित्रता, देश भक्ति, बौद्धिकता शुद्ध आचरण आदि गुणों को संस्कृत की सहायता से जाना जा सकता हैं। जो जीवन में हर कदम पर मार्गदर्शन करने में परम सहायक हैं। मनुष्य जीवन का उद्देश्य केवल आजीविका कमाना भर नहीं हैं। अगर ऐसा होता तो मनुष्य एवं पशु में कोई अंतर नहीं होता क्यूंकि पेट भरना, बच्चे पैदा करना और उनका लालन पोषण करना दोनों में एक समान हैं। मनुष्य के पास कर्म करने की स्वतंत्रता हैं एवं कर्म करते हुए आध्यात्मिक उन्नति करना उसके जीवन का लक्ष्य हैं। इस उन्नति में नैतिक मूल्यों का यथार्थ योगदान हैं। इन मार्गदर्शक मूल्यों को वेदादि धर्म ग्रंथों के माध्यम से प्रभावशाली रूप से सीखा जा सकता हैं।

एक उदहारण से इस विषय को समझने का प्रयास करते हैं। एक सेठ की तीन पुत्र थे। वृद्ध होने पर उसने उन तीनों को आजीविका कमाने के लिए कहा और एक वर्ष पश्चात उनकी परीक्षा लेने का वचन दिया और कहा जो सबसे श्रेष्ठ होगा उसे ही संपत्ति मिलेगी। तीनों अलग अलग दिशा में चल दिए। सबसे बड़ा क्रोधी और दुष्ट स्वाभाव का था। उसने सोचा की मैं जितना शीघ्र धनी बन जाऊंगा उतना पिताजी मेरा मान करेंगे। उसने चोरी करना, डाके डालना जैसे कार्य आरम्भ कर दिए एवं एक वर्ष में बहुत धन एकत्र कर लिया। दूसरे पुत्र ने जंगल से लकड़ी काट कर, भूखे पेट रह कर धन जोड़ा मगर उससे उसका स्वास्थ्य बेहद कमजोर हो गया , तीसरे पुत्र ने कपड़े का व्यापार आरम्भ किया एवं ईमानदारी से कार्य करते हुए अपने आपको सफल व्यापारी के रूप में स्थापित किया। एक वर्ष के पश्चात पिता की तीनों से भेंट हुई। पहले पुत्र को बोले तुम्हारा चरित्र और मान दोनों गया मगर धन रह गया इसलिए तुम्हारा सब कुछ गया क्यूंकि मान की भरपाई करना असंभव हैं, दूसरे पुत्र को बोले तुम्हारा तन गया मगर धन रह गया इसलिए तुम्हारा कुछ कुछ गया और जो स्वास्थ्य का तुम्हें नुक्सान हुआ हैं उसकी भरपाई संभव हैं, तीसरे पुत्र को बोले तुम्हारा मान और धन दोनों बना रहा इसलिए तुम्हारा सब कुछ बना रहा। ध्यान रखो मान–सम्मान तन और धन में सबसे कीमती हैं।

यह मान सामान, यह नैतिकता, यह विचारों की पवित्रता, यह श्रेष्ठ आचरण, यह चरित्रवान होना यह सब उस शिक्षा से ही मिलना संभव हैं जिसका आधार वैदिक हैं और जिस शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन हैं उससे इन गुणों की अपेक्षा रखना असंभव हैं। यह केवल उसी शिक्षा से संभव हैं जो मनुष्य का निर्माण करती हैं। मनुष्य निर्माण करने और सम्पूर्ण विश्व को अपने ज्ञान से प्रभावित करने की अपार क्षमता केवल हमारे वेदादि धर्म शास्त्रों में हैं और इस तथ्य को कोई नकार नहीं सकता हैं। एक साधारण से उदहारण से हम इस समझ सकते हैं कि जीवन यापन के लिए क्या क्या करना चाहिए यह आधुनिक शिक्षा से सीखा जा सकता हैं मगर जीवन जीने का क्या उद्देश्य हैं यह धार्मिक शिक्षा ही सिखाती हैं। समाज में शिक्षित वर्ग का समाज के अन्य वर्ग पर पर्याप्त प्रभाव होता हैं। अगर शिक्षित वर्ग सदाचारी एवं गुणवान होगा तो सम्पूर्ण समाज का नेतृत्व करेगा। अगर शिक्षित वर्ग मार्गदर्शक के स्थान पर पथभ्रष्टक होगा तो समाज को अन्धकार की और ले जायेगा।

इसके अतिरिक्त जर्मन सीखने वाले कितने बच्चे भविष्य में जर्मनी जाकर आजीविका ग्रहण करेंगे यह तो केवल एक अनुमान मात्र हैं। मगर नैतिक शिक्षा ग्रहण कर समाज में आदर्श सदस्य बनने वाले समाज का निश्चित रूप से हित करेंगे। इसमें कोई दौराय नहीं हैं। इसलिए समाज का हित देखते हुए संस्कृत भाषा के माध्यम से नैतिक मूल्यों की शिक्षा देकर समाज का आदर्श नागरिक बनाना श्रेयकर हैं।

– डॉ विवेक आर्य

आर्य महासम्मेलन तैयारी हेतु आगामी बैठकें राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य सम्बोधित करेंगे

1. दिल्ली आर्य कार्यकर्ता बैठक

रविवार, 7 दिसम्बर 2014,सायं 3.30 बजे
स्थानः आर्य समाज,अमर कालोनी,दक्षिण दिल्ली

2. हरियाणा प्रान्तीय कार्यकर्ता बैठक

शनिवार, 13 दिसम्बर 2014,प्रातः 11.30 बजे
स्थानः आर्य समाज,सैक्टर–13,करनाल

3. उत्तर प्रदेश कार्यकर्ता बैठक

रविवार, 14 दिसम्बर 2014,प्रातः 11.30 बजे
स्थानः आर्य समाज,थापर नगर,मेरठ

अपने निकट की बैठक में साथियों सहित पंहुचे
–महेन्द्र भाई,राष्ट्रीय महामन्त्री

आर्य समाज दुर्गापुरी शाहदरा का उत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 23 नवम्बर 2014, आर्य समाज दुर्गापुरी विस्तार, दिल्ली का उत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। कु. अजलि आर्या के मधुर भजन हुए व श्री महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया। समारोह की अध्यक्षता प्रधान श्री पीतमसिंह पीतम ने की। चित्र में बायें– डा. अनिल आर्य व दायें– सांसद डा. सत्यपाल सिंह का शाल से अभिनन्दन करते श्री रामपाल सिंह, एडवोकेट, श्री सहदेव, मंत्री श्री नरेन्द्र आर्य, श्री रामकुमार सिंह, श्री सतवीर सिंह व श्री हरबीर सिंह आदि।

आर्य समाज अशोक नगर व रोहिणी सैक्टर-4-5 का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 23 नवम्बर 2014, आर्य समाज अशोक नगर, दिल्ली का उत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। चित्र में प्रधान श्री चतुर्भुज अरोड़ा का स्वागत करते डा. अनिल आर्य, श्री रवि चड्डा, श्री यशपाल आर्य, पार्षद, श्री प्रकाश आर्य (मंत्री) व श्री राजवीर शास्त्री। द्वितीय चित्र–आर्य समाज सैक्टर–4–5, रोहिणी, दिल्ली के उत्सव पर पुस्तक का विमोचन करते डा. अनिल आर्य, मंत्री श्री सुदेश डोगरा, श्री धर्मपाल आर्य, श्री रणसिंह राणा व श्री सुरेन्द्र चौधरी।

आचार्य धूमसिंह शास्त्री का अभिनन्दन व कालका जी में सुदेश आर्या का स्वागत

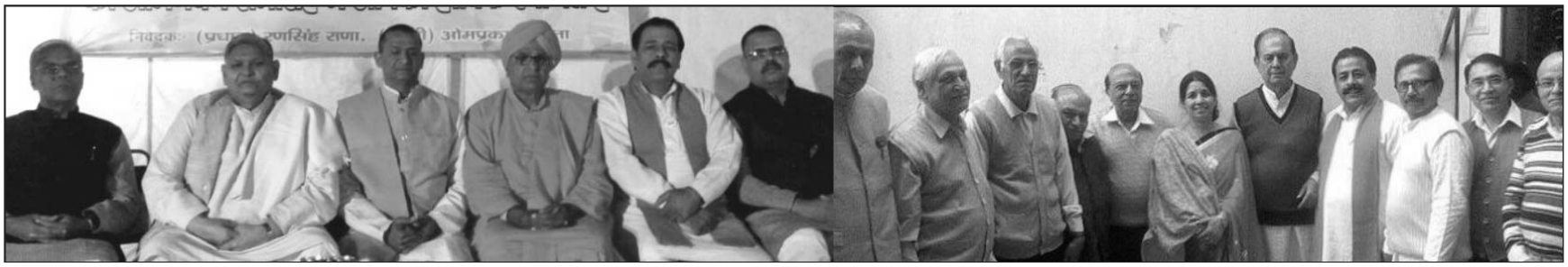

रविवार, 23 नवम्बर 2014, वैदिक विद्वान आचार्य धूमसिंह शास्त्री का आर्य समाज विशाखा एनक्लेव, दिल्ली में भव्य अभिनन्दन किया गया, इस अवसर पर मंच पर बांये से आचार्य छविकृष्ण शास्त्री, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, डा.अनिल आर्य व प्रधान श्री रणसिंह राणा। मंत्री श्री ओमप्रकाश गुप्ता ने संचालन किया। द्वितीय चित्र–आर्य समाज कालका जी, नई दिल्ली के उत्सव पर सुप्रसिद्धआर्य गायिका श्रीमती सुदेश आर्या के साथ–बांये से आर्य नेता श्री चतरसिंह नागर, श्री ओमप्रकाश छाबड़ा, श्री जितेन्द्र डावर, श्री सुरेन्द्र शास्त्री, श्री राजेश मेहन्दीरता, प्रधान श्री रमेश गाडी, डा.अनिल आर्य, मंत्री श्री राकेश भटनागर, श्री सत्यपाल सैनी आदि।

श्री मांगेराम गर्ग का अभिनन्दन व ''उन्नति का पथ'' पुस्तक का विमोचन

रविवार, 23 नवम्बर 2014, सुप्रसिद्धसमाज सेवी व भाजपा नेता श्री मांगेराम गर्ग के 78 वें जन्मोत्सव पर अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य,श्री रामचन्द्र सिंह व श्री अरूण आर्य। द्वितीय चित्र–शनिवार, 22 नवम्बर 2014, आर्य समाज हौज खास, नई दिल्ली के उत्सव पर श्री खेमचन्द बठेजा की पुस्तक ''उन्नति का पथ'' का विमोचन करते डा. अनिल आर्य, स्वामी प्रणवानन्द जी, पूर्व महापौर श्रीमती आरती मेहरा, श्री बठेजा जी, डा.वीणा बठेजा सभरवाल व संचालन करते मंत्री श्री विद्याभूषण गुप्ता।

फरीदाबाद में 19 दिसम्बर को पंहुचो

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के तत्वावधान में शुक्रवार, 19 दिसम्बर 2014 को सायं 5 बजे से रात्री 7.30 बजे तक अमर शहीद प.रामप्रसाद बिस्मिल का बलिदान दिवस आर्य समाज,सैक्टर–19,फरीदाबाद में मनाया जायेगा । स्वामी आर्यवेश जी,स्वामी श्रद्धानन्द जी,डा.अनिल आर्य आदि अपने विचार रखेगें । आप सभी सपरिवार दर्शन देवें ।

विमला ग्रोवर–प्रधान **महेश गुप्ता–महामन्त्री**

शोक समाचार

1. श्रीमती श्रीदेवी, एटा आयु 80 वर्ष (माता श्री सन्तोष शास्त्री) का गत दिनों निधन हो गया।
2. श्री बाबुराम तंवर, छतरपुर आयु-78 वर्ष (श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी) के पूज्य पिता जी का गत दिनों निधन हो गया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970